7

आज़ादी

(कविता)

बोलना/सुनना	पढ़ना/लिखना	व्याकरण-बिंदु	जीवन-कौशल/क्रियाकलाप
• मुक्त छंद कविता	• कविता • व्याख्या • सराहना	• शब्द-निर्माण के आधार– संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय	• अधिकार एवं कर्त्तव्य के संबंध की पहचान • जिज्ञासाओं के सही समाधान की क्षमता • चिंतन-क्षमता का विकास

मूलभाव

कविता का आरंभ काम से थके शागिर्द की जिज्ञासा से होता है। दर्जी से उसके शागिर्द ने पूछा कि आज़ादी का क्या अर्थ है? अपनी ओर से कई संदर्भों को जोड़कर शागिर्द ने आज़ादी का अर्थ जानना चाहा। कवि शागिर्द के माध्यम से प्रश्न करता है कि क्या सैर-सपाटा, घूमना-फिरना आज़ादी है? शागिर्द अपनी मुक्ति या आज़ादी के बारे में पूछता है कि क्या अनंत कपड़े के ढेर, सिलाई मशीनों के निरंतर गतिशील हो रहे पहियों, कपड़ों पर अनवरत चलने वाली सुइयों से मुक्ति पाने का नाम आज़ादी है? शागिर्द के सवाल को अनुभवी दर्जी ने ध्यानपूर्वक सुना। उसने बताया कि मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ही आज़ादी है। कवि के लिए आज़ादी एक अभिव्यक्ति है, जिसका माध्यम शब्द है। शिकारी के लिए तीर आज़ादी का एक साधन है। इस प्रकार कवि जीवन के लिए अनिवार्य साधन को भी आज़ादी मानता है। ज्ञान, कर्म और बलिदान के समन्वय से जीवन को स्वस्थ व सुंदर बनाया जा सकता है। दर्जी ने आज़ादी को कर्म से जोड़ते हुए कहा–कर्मठ व्यक्ति ही सपने देख सकता है। कर्म करते रहने में ही आज़ादी है। जो कर्म नहीं करता, उसे आज़ादी को भी भोगने का अधिकार नहीं है। कर्म ही आज़ादी है और परिश्रम का उचित फल प्राप्त करना भी आज़ादी है। उस्ताद का उत्तर सुनकर और उसे कर्मरत देखकर शागिर्द की परेशानियाँ दूर हो गईं।

मुख्य बिंदु

- कविता शागिर्द की जिज्ञासा से शुरू होती है।
- कविता के माध्यम से आज़ादी की वास्तविकता को समझाया गया है।
- आज़ादी का संबंध उच्छृंखलता, दुस्साहस, अवसरवाद या संकीर्ण सुख से नहीं, बल्कि श्रम, त्याग और बलिदान से है।
- कविता में 'श्रम और स्वप्न' तथा 'कर्त्तव्य और अधिकार' के संबंधों की चर्चा की गई है।
- यह कविता उन लोगों को अधिकार दिलाने की बात करती है, जो श्रम करने के बावजूद अपने अधिकारों से वंचित हैं।
- श्रम के महत्त्व को जानकर शागिर्द के सारे भ्रम दूर हो जाते हैं और वह काम में लग जाता है।

आइए समझें

- हमारे समाज में आज़ादी को अनेक संदर्भों में देखा जा सकता है।

- प्राय: उन्मुक्तता, मनमर्ज़ी, सैर-सपाटे, गैर-ज़िम्मेदारी, तात्कालिक तथा सीमित लाभ और कर्महीनता को ही आज़ादी मान लिया जाता है।
- आज़ादी का अर्थ ज़िम्मेदारी का भाव है, जिसे समझकर शागिर्द अपने काम में जुट जाता है।
- आज़ादी का अर्थ केवल अधिकारों को भोगना नहीं, बल्कि समाज तथा देश के प्रति कर्त्तव्य निभाना भी है।

यह जानना ज़रूरी है

- यह कविता मलयालम में लिखी गई है, जो केरल की भाषा है। कवि भारत के दक्षिणी हिस्से का है, इसलिए वह रेलगाड़ी के उत्तर दिशा में भागने की बात का उल्लेख करता है।
- बारह-तेरह वर्ष की उम्र के किशोर सैर-सपाटे को ही आज़ादी मानते हैं, इसलिए शागिर्द द्वारा किया गया यह प्रश्न उचित है कि सैर-सपाटा, घूमना-फिरना आज़ादी है?
- पथिक को अँधेरे में लैंपपोस्ट मिल जाए, तो उसकी परेशानियाँ समाप्त हो जाती हैं? क्या लैंपपोस्ट के नीचे रुकना आज़ादी है? क्या निश्चिंतता आज़ादी है? – शागिर्द के मन में उठने वाले प्रश्न उसकी चिंतन-क्षमता को बताते हैं।
- दर्जी ने अपने अनुभव के आधार पर बताया कि मूलभूत अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति ही आज़ादी है। भूखे को खाना, प्यासे को पानी, ठंड से पीड़ित के लिए राहत वाले ऊनी वस्त्र, थके-माँदे के लिए बिस्तर ही आज़ादी है।
- समाज और देश में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी आज़ादी है। समाज-देश के हित में जो हमें ठीक लगे, उसे अवश्य कहें। साहस के साथ अपनी बातें रखना भी एक प्रकार की आज़ादी है।
- ज्ञान हमें मुक्त करता है। यहाँ मुक्त करने का आशय है–सोचने-विचारने की क्षमता को विस्तार देना। ज्ञान को कर्म में बदलना भी ज़रूरी है। देश की आज़ादी का हमें ज्ञान हुआ, फिर उसे प्राप्त करने के लिए सक्रिय हुए, त्याग-बलिदान किया और आज़ाद हुए।

महत्त्वपूर्ण व्याकरण-बिंदु

- कविता में कई ऐसे शब्द आए हैं, जिनमें उपसर्गों और प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है। अज्ञानी='अ' उपसर्ग, 'ज्ञान' मूल शब्द एवं 'ई' प्रत्यय। इसी प्रकार अनंत, गतिमान, शिकारी, चमकीली, बोनेवाला, तनहाई आदि में भी उपसर्गों व प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है।
- शब्द-निर्माण के लिए उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास की सहायता ली जाती है।

  संधि–दो वर्णों के मेल को संधि कहा जाता है।

  जैसे–विद्या+आलय=विद्यालय, रवि+इंद्र=रवींद्र।

  समास–दो या अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।

  जैसे–रेल पर चलने वाली गाड़ी = रेलगाड़ी

  रसोई के लिए घर=रसोईघर

सराहना-पक्ष

- कविता शागिर्द की जिज्ञासा से शुरू होती है। जिज्ञासा के कारण कविता पाठकों को आकर्षित करती है। प्रश्नों और उत्तरों की लयात्मकता से आज़ादी की वास्तविकता स्थापित होती है। कविता में आज़ादी का अर्थ कर्म से मुक्त होना नहीं, बल्कि कर्म में रत होना बताया गया है।
- कविता की भाषा सरल और सहज है। शब्द भी आसान और बोलचाल की भाषा के हैं। कविता में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

  फ़ारसी शब्द–उस्ताद, दर्जी, शागिर्द, तनहाई, पनाह

  अरबी शब्द–मुसाफ़िर, महफ़िल

  अंग्रेज़ी शब्द–लैंपपोस्ट
- चमकीली नोंक, अनंत कपड़े, गतिमान पहिए जैसे उदाहरणों में 'चमकीली', 'अनंत', 'गतिमान' विशेषणों का सुंदर प्रयोग किया गया है।

अधिकतम अंक कैसे पाएँ

- उपयुक्त ठहरावों के साथ कविता का लयात्मक पाठ उसके अर्थ को खोलता है।

- शागिर्द के प्रश्नों को स्मरण रखना तथा दर्जी के उत्तर को याद रखना तथा उन पर विचार करना आवश्यक है।
- प्रश्नों और उत्तरों के संकेतों (उनकी व्याख्या) को याद रखना आवश्यक है।
- आज़ादी के विभिन्न संदर्भों के तर्कपूर्ण उल्लेख का अभ्यास कीजिए।

अपना मूल्यांकन करें

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए :

   'आज़ादी' का वास्तविक अर्थ है–

   (क) कुछ भी करने की छूट ☐
   (ख) कर्त्तव्य-पालन ☐
   (ग) स्वच्छंदता ☐
   (घ) कर्म से मुक्ति ☐

2. दर्जी ने शागिर्द की जिज्ञासा को शांत करने के लिए जो समाधान दिए हैं, क्या आप उनसे सहमत हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए।

3. 'सुई की नोंक पर टिकी है आज़ादी' इस पंक्ति से आप क्या समझते हैं– अपने विचार लिखिए।